अनुभव क्या बताना चाहिए कि ब्रह्माकुमारियाँ, सो ये तो सिद्ध हो जाता है कि शिवबाबा के पौत्रे और पौत्री हैं; क्योंकि ब्रह्मा है शिवबाबा का बच्चा और रचता कहा जाता है; क्योंकि ये बातें भी समझ जाना चाहिए बच्चों को, भले फीमेल हो तो कोई हर्जा नहीं है। ये बड़ी सहज बातें हैं। प्रजापिता ब्रह्मा,विष्णु,शंकर, इनके ऊपर में है शिव। अच्छा, ये तो ज़रूर समझेंगे कि शिवबाबा के ये तीन बच्चे हैं और फिर प्रजापिता ब्रह्मा के हैं बहनें और भाई बच्चे, मनुष्य सृष्टि। ये तो बहुत सहज है समझना, ये ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ बाप से वर्सा लेती हैं और विष्णुपुरी की...। देखो, ये तो बिल्कुल सीधा, चित्र ही त्रिमूर्ति, सिर्फ उन लोगों ने ऊपर में शिव नहीं डाला है। नहीं तो ये तो सब कोई जानते हैं कि शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं ये विष्णुपुरी की। विष्णुपुरी कहो, स्वर्ग कहो, वैकुण्ठ कहो, बात एक ही है। अभी तुम बच्चे ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ तो हो ही और तुम बच्चों को ये पूरा निश्चय है तब तो यहाँ आए हुए हो। हम शिवबाबा से अपना बेहद का वर्सा फिर से ले रहे हैं। कोई ऐसे भी नहीं, फिर से ले रहे हैं; क्योंकि 'फिर से' तुम सिर्फ अभी कह सकती हो। नहीं तो मनुष्य थोड़े ही कहेंगे कि फिर से हम वर्सा पा रहे हैं। तुम अभी समझते हो कि बरोबर हम बेहद के बाप से... और बाबा ने बहुत अच्छा समझाया है कि बाप तो...सबको है। एक लौकिक बाप, एक परलौकिक, जिसको परमात्मा,ईश्वर,प्रभु उसको भी बाबा कहते हैं, फादर कहते हैं, परमपिता कहते हैं; परन्तु मनुष्य की पत्थर बुद्धि होने कारण...। ये लौकिक पिता को तो जानते हैं कि बरोबर हमको हद का वर्सा जन्म–जन्मांतर मिलता आता है अभी और जन्म–जन्मांतर उनको भी याद करते आते हैं कि तुम मात–पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। अभी उनको याद करते रहते हैं भारतवासी। सुख घनेरे ये ज़रूर है कि इस समय में दुःख घनेरे। समझा ना। उनको याद करते हैं सुख घनेरे, क्यों? यहाँ दुःख घनेरे। जैसे मरते हैं तो जाते हैं वैकुण्ठ में, कहते हैं स्वर्गवास हुआ। तो इससे सिद्ध होता है ज़रूर नर्कवासी है। वैसे ही उस बाप को याद करते हैं कि आ करके हमारा दुःख हरो, सुख दो। तो ज़रूर मनुष्य दुःखी हैं; क्योंकि सुख तो स्वर्ग में ही होता है, कोई यहाँ तो सुख होता नहीं है। यहाँ है अल्पकाल क्षणभंगुर। ये सन्यासी लोग भी इन साहूकारों को कहते हैं कि कागविष्टा समान सुख है। सन्यासी सब ऐसे कहते हैं। परन्तु उनको फिर ये मालूम नहीं है बरोबर यहाँ कागविष्ठा समान सुख है। विषय वैतरणी नदी में क्या सुख होगा! परन्तु उनको ये मालूम ही नहीं है कि स्वर्ग में अथाह सुख है, अपार सुख है। उसका नाम ही है सुखधाम और इसका नाम ही है दुःखधाम। सारी सृष्टि है दुःखधाम, इसको सुखधाम तो बाप बिगर कोई बनाय नहीं सकते हैं। तो देखो, बाप बैठ करके बच्चों को अभी सुखधाम का रास्ता बताते हैं और साफ कहते भी हैं कि बच्चे, भारत में मेरी शिवजयन्ती मनाते तो हो ना। तो बाकी ज़रूर मेरी यादगार रखते हो, शिवजयन्ती मनाते हो। मैं आया था। फिर कब आऊँगा, ये तुम बच्चों को मालूम नहीं है। जब आता हूँ तब तुम बच्चों को बताता हूँ कि मैं हर कल्प के संगम पर, जब ये सृष्टि पतित होती है, तो पावन बनाने के लिए आता हूँ और तुम पुकारते रहते हो कि हे पतित–पावन आओ, आ करके हमको पावन दुनिया के मालिक बनाओ। पावन दुनिया स्वर्ग और पावन दुनिया मुक्तिधाम। उसको भी तो दुनिया कहते हैं ना; क्योंकि आत्माएँ रहती हैं वहाँ। इसको इनकारपोरियल वर्ल्ड कहा जाता है। तो देखो, दुनिया कहते हैं ना। निराकारी दुनिया। ये साकारी दुनिया। तो बाप कहते हैं मैं आता हूँ, आ करके तुम बच्चों को सुखधाम का मालिक बनाता हूँ, दूसरों को शांतिधाम का मालिक बनाता हूँ। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में तो यही रहता है अच्छी तरह से कि जब हम अभी बाबा से वर्सा लेते हैं सुखधाम का यानी स्वर्ग का तो तुम होंगे स्वर्ग में यहीं भारत में। बाकी इतने जो सभी करोड़ों मनुष्य हैं, बच्चे जानते हैं कि वो शांतिधाम में चले जाएँगे, वहाँ अपने–2 धर्म के सेक्शन या तब्बके में। अभी ये जो दो–2, चार–2

अक्षर ज्ञान है, ये भी दुनिया में कोई भी मनुष्य नहीं है, जो जानता हो; क्योंकि ये खुद भी कहते हैं मैं भी कुछ भी नहीं जानता था। जबकि बाबा आया हुआ है इसमें, समझाते हैं, तो हम भी जानते हैं और तुम बच्चे भी जानते हो। ये बाप आ करके समझाते भी हैं कि मैं आ करके ये ज्ञान यज्ञ रचा हूँ। ये भी नाम ही है रूद्र ज्ञान यज्ञ। अभी कोई–2 रूद्र यज्ञ रचते हैं। अभी रूद्र यज्ञ हो गया पूजा का जो भक्तिमार्ग में रचते हैं। बाकी रूद्र ज्ञान यज्ञ तो कभी कोई नहीं रच सकते हैं या ज्ञान यज्ञ कोई भी नहीं रच सकते हैं सिवाय बाप के; क्योंकि वो है ही ज्ञान का सागर। तो ज्ञान यज्ञ कोई भी बच्चे नहीं रच...। देखो, जब छोटा यज्ञ रचते हैं, उसमें रचते हैं, पीछे यहाँ भागवत पढ़ते हैं, वहाँ वेद पढ़ते हैं, वहाँ फलाना करते हैं, बड़ा मण्डप बना देते हैं। तुम गए होंगे कभी यज्ञ देखने के लिए। तो बड़ा–2 वो बना देते हैं।..... वहाँ रामायण की कथा.....। इनको वो लोग समझ सकते हैं, कहते हैं ये हमने रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा है। रूद्र ज्ञान यज्ञ अलग होता है और रूद्र यज्ञ अलग होता है। जब रूद्र यज्ञ रचते हैं तो सिर्फ ये मिट्टी के शिव के लिंग बना करके और सालिग्राम के लिंग बना करके, फिर उनकी पूजा करके रोज़ बनाते हैं, तोड़ते हैं, बनाते हैं, तोड़ते हैं और वो जो रूद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं, उसमें फिर बड़ा थल्ला बना करके, एक तरफ में ये भी होता है, दूसरे तरफ में यज्ञ भी है। उनमें भी आहुति डालते थे। शायद बहुत बच्चों ने नहीं देखे होंगे इन लोगों के यज्ञ। अब ये तो सभी भक्तिमार्ग के। वो ऐसे कभी नहीं कहेंगे कोई कि इस यज्ञ में ये सारी दुनिया स्वाहा हो जाएगी। ये तो कभी कोई कह भी न सके। ऐसा यज्ञ रच भी न सके और बाप आकर कहते हैं– बच्चे, ये यज्ञ रचा हुआ है ज्ञान का, इसमें सारी जो भी पुरानी दुनिया है, सब स्वाहा हो जाएगी, खतम हो जाएगी। पीछे भक्तिमार्ग ही नहीं होगा। ये पुरानी दुनिया ही नहीं होगी। पुरानी दुनिया के मनुष्य ही नहीं होंगे। ये गंदे कोई होंगे ही नहीं। पीछे ये भारत फिर स्वर्ग हो जाता है और इनका राज्य हो जाता है देखो। तुमको तो नशा रखना चाहिए कि सिवाय बाबा से ये पूरा वर्सा लेने हम सुख नहीं, आराम नहीं करेंगी। इतना तुम बच्चों को नशा रहना चाहिए खुशी का। जब तलक हम बहुतों को बाबा का परिचय न दें...। बाबा का परिचय तुम बहुतों को देंगी। दिन–प्रतिदिन प्रभाव निकलता जाएगा और बहुतों को तुम परिचय देंगी, अनेकों को एकदम; क्योंकि सभी पीछे कहते हैं ना– अहो प्रभु तेरी लीला। कौन–सी लीला? ये दुनिया को पलट खाने की। ये पुरानी दुनिया को खतम कराय, नई दुनिया स्थापन कर और नई दुनिया के लिए राजधानी स्थापन कर रहे हैं यहाँ। ये कल्प का संगमयुग है ना। इनका बड़ा महत्व है। इसको ही कहा जाता है कल्याणकारी संगमयुग। और कोई भी युग कल्याणकारी नहीं है। देखो, बाबा कैसे समझाते हैं! इस समय से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ठीक! एकदम चढ़ जाते हो ऊपर में, चढ़ती कला। अच्छा, फिर तुम कहेंगी– बाबा, सतयुग और त्रेता का युग? बाबा कहेंगे ..... क्योंकि 2 कला कमती हो जाती हो। तो सिर्फ यहीं तुम एकदम ऊँच पद पा सकती हो। बाकी तो सीढ़ी उतरते ही जाते हो, उतरते ही जाते हो। 2 कला सतयुग–त्रेता में कमती हो गई, पीछे त्रेता से द्वापर में कलाएँ और कम हो गईं। यहाँ तो कोई भी कला नहीं, कोई में भी। बाबा कह देते हैं ना– ये सभी हैं आसुरी सम्प्रदाय। ये लिखा हुआ तो है ना। इस आसुरी सम्प्रदाय को हम पलटाकर दैवी सम्प्रदाय बनाता हूँ। तो ये कोई साधु,संत,महात्मा का तो काम नहीं है ना। वो धर्म ही अलग है। जैसे मनुष्य क्रिश्चियन जाकर बनते हैं या बौद्धी बनते हैं, जाकर पूजते हैं ना और कोई गुरू नानक को जाकर पूजते हैं, ये हिन्दू धर्म वाले; क्योंकि उन हिन्दुओं का कोई धर्म तो है नहीं। तो वैसे ही फिर सन्यासी धर्म। तो कोई हिन्दू धर्म तो है नहीं। ये तो निवृत्तिमार्ग है। ये मत्था मुँड़ाना और ये कफनी पहनी और ये है सिर्फ पुरुषों के लिए; परन्तु आजकल धर्म की ग्लानि और पेट के कारण, ये लोग माइयों को भी घर छुड़ाय देते हैं और कफनी पहनाय देते हैं। देखो, विलायत में भी जाती हैं और वहाँ

जाकर सब झूठ बोलते हैं। बिचारे विलायत वाले समझते हैं कि प्राचीन भारत का जो योग है वो कोई हमको सिखलाए; क्योंकि उस प्राचीन भारत के योग से मनुष्य जीवनमुक्ति पाते हैं। तो ये वहाँ जा करके, गीता उठा करके, झूठ कहते हैं कि ये है भारत का प्राचीन योग और जानते धूर भी नहीं। ये तो बाप बैठ करके समझाते हैं ना। राजयोग तो बाप सिखलाय। राजयोग तो निवृत्तिमार्ग वाला समझाय न सके। ये राजयोग है राजा–रानी बनने की। तो प्रवृत्ति मार्ग हुआ ना। तुम बच्चे तो सदैव बहुत हर्षित होने चाहिए, सदैव बहुत सुखी होने चाहिए कि अभी...। बाकी थोड़ा रोज़ है। जैसे कोई नाटक होता है ना, नाटक पूरा होता है, बाकी आधा घण्टा होता है तो बोलते हैं– अभी आधा घण्टा जल्दी पूरा होवे तो ये उतार करके घर को चला जावे। तो तुम्हारा भी ऐसा है। बाकी कितना रोज़ होंगे! ये बाबा के होते ही तो विनाश होने का है ज़रूर। तो कितना दिन होगा? तुम्हारे से बहुत पूछते हैं, भला ये विनाश जो दिखलाते हो, वो कब होगा? बोलो, ये राजधानी की स्थापना हो जाए। बस, राजधानी की स्थापना हुई और विनाश तो ज़रूर होगा। तुम यहाँ क्या करके रहेंगी! तुम कर्मातीत अवस्था में हो गईं ना, तुम यहाँ नहीं रह सकते हो। तुम ये शरीर फेंक करके भागे। तो है सिर्फ...। बस, कर्मातीत इनको भी बनना है। बच्चों को भी बनना है। बस, कर्मातीत अवस्था को पहुँचा, इसी को ही...। तो ज़रूर इनके होते ही तो विनाश होना है ना और देखना भी है। देखेंगे भी कोई अनन्य होंगी, बहुत अच्छी मजबूत, तो पिछाड़ी तक कायम रहेंगी। देखेंगी क्यों नहीं बहुत कुछ! परन्तु पिछाड़ी तक बहुत कोई अनन्य रह सकती हैं। बाबा कहते हैं कि उसमें बच्चों के लिए तकलीफ नहीं है। सिर्फ याद करती रहो, तो खाद निकल जाए। देखा है यहाँ, कट चढ़ी हुई कोई चीज़ होती है तो घासलेट में डाल देते हैं, तो उनकी कट निकल जाए। ये भी ऐसे ही है, बाप को याद करना है। तो ये ऊपर में जो पापों का बोझा है ना, वो सब खतम हो जाएगा। ये तो गाया हुआ है कि बाप प्रतिज्ञा करते हैं– अगर तुम मेरे साथ योग लगाएँगे, इस योगबल से तुम पतित से पावन बन जाएँगे। तभी तो पतित–पावन को बुलाते हैं ना। अभी वो क्या गंगा में स्नान कराएगा? क्या करेगा? और कोई उपाय है? जलाएगा–गलाएगा तुमको?.. भट्ठी में डालेंगे? नहीं, ये भट्ठी, इसको ही कहा जाता है– योग की भट्ठी, याद की भट्ठी, जिसमें तुम बच्चों का ये विकर्म विनाश होगा। अब ये तो बच्चे समझदार हैं बहुत अच्छी तरह से और ये भी ज़रूर है कि कुछ तो तकलीफ होंगी। ऐसे राजाई कैसे मिलेगी! सहज तो बहुत कहते हैं बाप को याद करना। जैसे बाप को याद करते हैं, कोई पति को याद करते हैं। इसको तो पतियों का पति भी कहते हैं। तो जबकि ये इतना वर्सा देते हैं तो कोशिश करनी है। फिर अपने दिल से पूछते रहो कि ऐसे जो मीठा बाबा है, जिससे हमको वर्सा लेना है, हम कितना याद करते हैं उनको। कितना सुबह को उठ करके प्रेम में आँसू बहाकर याद करते हैं– बाबा, ये जीय को दान देने वाले; क्योंकि ये दुःखी हैं ना। इसको कहा जाता है जीयदान और ये गाया भी हुआ है कि शरण पड़ी मैं तेरी। देखो, कितना गीत गाते हैं शरण पड़ी को। तो शरण भी कब पड़ेंगी? शरणागत शरणागति ; शरण पड़ेंगी सद्गति के लिए। सो तो जब बाबा आएँगे तभी तो पड़ेंगी ना। तो देखो, तुम अभी बाप के बने हो, किसलिए? सद्गति के लिए। वो तो नहीं है, शहर में देखो, विलायत वाले एक शहर से दूसरे में जाते हैं शरणागत लेने। तुम पढ़ी–लिखी नहीं हो। ये लोग जानते हैं कि रशिया से अमेरिका भाग जाएगा, कोई फलानी जगह से फलानी जगह। जहाँ वो बहुत मजबूती और धन और सुख देखेंगे ना, वो वहाँ चले जाते हैं। उसको भी ऐसे कहते हैं कि हम यहाँ एशलम...। ऐसे है ना। जाते हैं दूसरे गाँव में एशलम, उसको (कहा) जाता है शरण। जैसे पाकिस्तान के यहाँ आए, यहाँ के वहाँ गए, तो देखो उनको कहा जाए शरणागति। तो अभी है ईश्वर की शरण। सो ईश्वर की शरण, ईश्वर के बने हो। वो तो आते ही हैं बच्चों को सुखधाम के लिए विश्व का मालिक

बनाने। तो तुम बच्चों को कितना नशा होना चाहिए। अभी बाकी थोड़ा रोज़ हैं, हम अभी विश्व का मालिक बनते हैं। बाबा ने समझाया ना कि योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। नहीं तो बाहुबल से, इतनी ताकत है इनमें बॉम्ब्स वालों की जो अभी सबको दोनों मिल करके बॉम्ब्स दिखलाए आपस में, ये क्रिश्चियन लोग, तो सब ठण्डे हो जावें, सो जावें एकदम। बोलो– नहीं, हम आपके शरण में पड़े हैं। सारे विश्व का मालिक बन सकते हैं; परन्तु बाप बैठकर समझाते हैं– लॉ नहीं है। कोई बाहुबल से विश्व का मालिक बने, ये कायदा नहीं है। योगबल से विश्व का मालिक बनते हो। तो बल मिलता है बाप से। अच्छा, कल कौन–2 जाते हैं ...के लिए? समझा ना। मैंने बहुत इन बच्चों को समझाया है; परन्तु अक्ल बुद्धि में बैठता नहीं है, दाम लगा देते हैं। कभी भी दाम नहीं लगाना चाहिए एग्ज़िबिशन में। उनको बोल देना चाहिए गरीबों के लिए है फ्री ; क्योंकि बाप गरीब निवाज़ है। गरीबों के लिए फ्री, कोई पैसा नहीं है। हाँ, बाकी जिनके पास पैसे हैं ; क्योंकि वो पैसा देंगे तो हम और बना करके फिर गरीबों को मुफ्त में देते रहेंगे। अभी इसलिए चाहे 5 रुपया दो; क्योंकि कम से कम है इनकी 5 रुपया कीमत। पता नहीं एग्ज़िबिशन में कितने को देते हैं, ये मालूम नहीं है; परन्तु क्या कहना चाहिए, गरीबों के लिए है मुफ्त। देखो, ये इतने–2 सब मुफ्त में देखने आते हैं ना। और साहूकार! पीछे जैसा साहूकार, चाहे 5 देवे, चाहे 10 देवे, चाहे 100 देवे, चाहे 1000 देवे ; क्योंकि 1000 देंगे तो हम और हज़ार–दो डाल करके और छपा करके गरीबों को देंगे। तो अगर कोई अच्छा सेन्सीबुल होगा तो झट 100 रुपये का नोट भी फेंक देगा, 50 भी फेंक देगा, 10 भी फेंक देगा। बाकी कोई मनहूस होगा तो मुट्ठा ऐसे भी ले जाएगा। ऐसे भी मनहूस होते हैं। ऐसे भी होते हैं। ये मोस्ट वैल्युएबल चीज़ है यानी इसको समझने से बच्चे विश्व के मालिक बन सकते हैं। इनका दाम, मूल्य कोई दे थोड़े ही सकते हैं। जब तलक इनके ऊपर ने समझे, विश्व का मालिक न बन सके। ये ऐसी चीज़ है। एक ये लॉकेट बाबा देते हैं। ये बाबा है, ये ब्रह्मा है, दादा है। ये बाबा दादा द्वारा विष्णुपुरी का मालिक बनाते हैं। देखो, कितनी सहज बात है! और ऐसे भी नहीं कि नहीं बनाया था। भारत को बनाया था। .... इनका राज्य था। अभी नहीं है। अभी फिर से राज्य स्थापन हो रहा है। अच्छा बच्ची! ..... कोई को साड़ी देगा, कोई को ब्लाउज देगा, किसको बूट देगा। बूट भी रखे हुए हैं। चम्पल(चप्पल) भी रखे हुए हैं। कभी भी देखो टूथपेस्ट है, तुम लोग को थोड़े ही जाकर बाज़ार से लेना है। नहीं, ये बाबा होलसेल में लेते हैं। सस्ता पड़ता है बहुत। कोई भी चीज़, दाढ़ी का समान, किसका भी सामान, मम्माओं के लिए जो भी सामान चाहिए, सब कुछ। छोटा बाबा, बच्चे और बच्चियाँ। एक ही बार कल्प के संगम पर ये होते हैं। तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। (म्युज़िक बजा)

मीठे–2 सिकीलधे ब्राह्मण कुलभूषण स्वदर्शन चक्रधारी सर्विसेबुल बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट। ऐसे कोई और गुडनाइट करने वाला होगा? कोई को पता भी नहीं, अक्ल भी नहीं। इसका तो देखो कितना अर्थ है! कोई नया बैठा हो तो ये समझेगा कुछ? ये क्या स्वदर्शन चक्रधारी है? स्वदर्शन चक्रधारी तो कृष्ण है। ये विष्णु के हाथ में होता है। ये क्या सभी स्वदर्शन चक्रधारीं? हाँ, ये सब स्वदर्शन चक्रधारी। सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को, बाप को और ये रचना के आदि,मध्य,अंत को जानने वाले। इसको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। ऐसे स्वदर्शन चक्रधारी बच्चों प्रति यादप्यार और गुडनाइट।